Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, JAN–FEB, 2018, VOL- 5/44

''अध्यात्म रामायण में समाज चित्रण''
(वर्णित आश्रम व्यवस्था के विशेष सन्दर्भ में)

रंजना यादव

1556, शम्भूनगर, शिकोहाबाद

Abstract

अध्यात्म रामायण के अन्तर्गत परम्परागत चार आश्रमों का वर्णन प्राप्त होता है, जिनमें पहला ब्रह्मचर्य आश्रम, विद्याध्ययनकाल की अवधि निश्चित करता है। दूसरा गृहस्थ आश्रम है विद्याध्ययनकाल अर्थात् ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति तथा गृहस्थ जीवन में प्रवेश और सामाजिक जीवन में पदार्पण का संकेत देता है। तीसरा आश्रम वानप्रस्थ आश्रम है जो अर्थोपार्जन से विरक्त होकर तपस्वीजीवन व्यतीत करने की प्रेरणा प्रदान करता है। इनके अतिरिक्त चौथा आश्रम सन्यास आश्रम के नाम से जाना जाता है, जो कि संसार–त्याग एवं वैराग्य धारण का संकेत देता है। आश्रम व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक द्विज से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह अपने जीवन को आश्रम व्यवस्था द्वारा प्रदत्त व्यवस्था के अनुसार संचालित करे। मानव के सम्पूर्ण जीवन को चार विभागों में विभक्त कर प्रत्येक आश्रम को जीवन के एक हिस्से के रूप में माना जाता था, जो कि एक पडाव के रूप में मनुष्य के लिये भावी जीवन की तैयारी के रूप में निर्धारित अवधि तक प्रशिक्षित करता था, जिससे वह आगामी आश्रम के लिये पूर्ण परिपक्त हो जाए।

पारिभाशिक ाब्दावली: *वैराग्य, अध्यात्म रामायण, आश्रम , विरक्त।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध कार्य सर्वेक्षण विधि के माध्यम से सम्पादित किया गया। शोध उद्देश्यों की वांछित प्रतिपूर्ति हेतु मूल्यांकन, परीक्षण व अवलोकन आदि प्रविधियों का प्रयोग किया गया। विधि व प्रविधि अनुसंधान प्रकिया को परिचालित करने का एक तरीका है जो समस्या की प्रकृति के अनुसार निर्धारित होता है।

ऐतिहासिक विधि : इसका संबंध भूत काल से है तथा भविष्य को समझने के लिए भूत का वि" लेषण करती है।

अध्यात्म रामायण के अन्तर्गत वणित आश्रम व्यवस्था : अध्यात्मरामायण में वर्णाश्रम धर्म के पालन पर प्रकाश डालते हुये कहा गया है कि मनुष्य को भी सबसे पहले अपने वर्ण और आश्रम के लिये शास्त्र–विहित क्रियाओं का यथावत् पालन कर चित्तशुद्धि के अनन्तर अन्य कर्मों से विरक्त हो जाना चाहिए।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ब्रह्मचर्य आश्रम : बह्मचर्य आश्रम का प्रारम्भ उपनयन संस्कार से होता है, इसमें विद्याध्ययन गुरू के प्रति आदर भाव रखते हुए किया जाता है। राम लक्ष्मण सहित चारों भाईयों ने उपनयन संस्कार के बाद वशिष्ठ के द्वारा समस्त शास्त्रों एवं धनुर्वेद आदि की शिक्षा प्राप्त की थी।[1] तत्पश्चात् जब राम–लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ गये, उस समय भी विश्वामित्र ने उन्हें अनेक प्रकार की गूढ़ विद्याऐं प्रदान कीं।[2] ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति काल में उसकी परीक्षा ली जाती थी, इसके पश्चात् गुरू के द्वारा गृहस्थाश्रम में प्रवेश की आज्ञा दी जाती थी राम लक्ष्मण की जब विश्वामित्र ने पूर्ण रूपेण परीक्षा लेली तब उन्हें वे मिथिला ले गये तथा सीता के साथ उनका पाणिग्रहण कराया। गृहस्थाश्रम में अनेक यज्ञादि भी किये जाते थे, जिनमें देवयज्ञ, पितृयज्ञ, आदि प्रमुख थे। इसके अतिरिक्त वंश वृद्धि और पितृऋण चुकाने के लिये श्राद्ध तथा यज्ञ किये जाते थे। धार्मिक क्रियाओ ककी सम्पन्नता में पत्नी की उपस्थिति आवश्यक थी। सीताजी की अनुपस्थिति में राम ने उनकी स्वर्ण प्रतिमा रखकर अश्वमेघ यज्ञ किया था।[3] जो इस बात का सूचक है कि धर्म पत्नी, सहधर्मचारिणी कहलाती थी। अध्यात्म रामायण में गृहस्थ आश्रम में भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान और भक्ति इत्यादि का पालन मानव की मनोवृत्ति पर निर्भर करता है, इसके लिये किसी विशेष आश्रम अथवा अवधि को नियन्त्रित नहीं किया गया, अतः अध्यात्म रामायण में गृहस्थ आश्रम के प्रति विशेष आदर प्रदान किया गया है।

गृहस्थाश्रम : गृहस्थ आश्रम को विभिन्न आचार्यों ने ज्येष्ठ आश्रम कहकर उसकी महत्ता को स्वीकार किया है। मनु ने तो यहाँ तक कहा है कि– जो अक्षय स्वर्ग और इस लोक में सुख की कामना करते हैं उन्हे प्रयत्पूर्वक इस आश्रम में धर्मों का पालन करना चाहिये। मानव गृहस्थाश्रम में रहता हुआ विभिन्न परिस्थितियों में स्वयं रहता हुआ उन परिस्थितियों का अनुभव करता हुआ विशुद्ध प्रेम, त्याग, निःस्वार्थ भाव एवं सहानुभूति आदि के पाठ को गृहस्थाश्रम में रहते हुये अधिक अच्छा सीख सकता है। व्यक्तित्व एवं सामाजिक समस्त उत्तरदायित्वों के निर्वाहक रूप में गृहस्थाश्रम सर्वाधिक सहायक है। उपनिषदों एवं आरण्यकों में जिस वैराग्य की भावना को प्रसारित किया उसी भावना को धर्म से जोडकर अध्यात्म आदि ग्रन्थों ने कर्तव्य कर्म के रूप में बतलाकर गृहस्थाश्रम को गौरवान्वित किया है। माता, पिता, गुरू, भाई–बहिन के सामाजिक एवं धार्मिक आदर्शों के प्रति अध्यात्म रामायणकार ने अपनी रचना धर्मिता को प्रकट किया है। कवि की लेखनी से यह आदर्श

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

चित्र रूप में उभरकर पाठक के लिये इनके प्रति श्रद्धा प्रणयन एवं प्रेरणा प्राप्त होती रही है। साथ ही यह भी स्पष्ट होता है कि लेखक का मुख उद्देश्य राम और सीता के पारस्परिक प्रेम के आदर्श को उपस्थित करना था।[4]

वानप्रस्थ आश्रम : शास्त्रों से निर्दिष्ट है कि गृहस्थाश्रम में रहकर समाज का हित करने के उपरान्त शुद्ध, प्रेम, दया, सहानुभूति, करूणा एवं स्वार्थ, त्याग आदि गुणों से समन्वित होकर वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिये। गृहस्थी विषय भोग से निवृत्त हाकर धर्माचरण युक्त होकर योग साधन द्वारा ब्रह्म साक्षात्कार के लिये वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करता है। गृहस्थी के भार को वहन करते–करते जब मानव श्रान्त हो जाता था एवं सांसारिक कार्यों से विरक्त निर्बल एवं अशक्त अनुभव करता था, त बवह अपने समस्त गृहस्थ–सम्बन्धी कार्यों को पुत्र अथवा उत्तराधिकारी को सौंपकर एकान्त में शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिये वन, आदि निर्जन स्थलों का आश्रय लेता था।

अध्यात्मरामायण में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिनमें राजाओं ने सांस्कृतिक मान्यताओं का अनुकरण करते हुये वानप्रस्थ आश्रम के प्राप्त होने पर राज्य का भार पुत्रों को सौंप दिया तथा स्वयं वन में जाकर तापस जीवन व्यतीत करते हुये सांस्कृतिक मर्यादाओं का निर्वाह किया। रामायण में राजा दशरथ का वाक्य इसका उदाहरण है। राजा दशरथ स्वयं वानप्रस्थ की मान्यता के पालन का निश्चय करते हुये कहते हैं कि मैं अब राज्य के कार्यभार को वहन करने में अशक्त अनुभव कर रहा हूँ। अतएव मेरा विचार है कि मैं राज्य का भार अपने ज्येष्ठ पुत्र राम को सौंपकर स्वयं वन चला जाऊँ।[5]

अध्यात्म रामायण में कालनेमि और रावणसंवाद में कालनेमि रावण से कहता है कि आप विभीषण को राज्य सौंपकर मुनिजनों से सेवित तपोवन चले जाये। ब्राह्मण शुक भी इस आश्रम के ग्रहण का उपदेश देता हुआ दिखायी देता है।[6] इनके अतिरिक्त भरत जब चित्रकूट में राम से मिलते हैं तो वे यही कहते हैं कि वंशवृद्धि के लिये पुत्र उत्पन्न करके तथा उसे राजसिंहासन पर बैठाने के बाद आपको वन चला जाना चाहिये लेकिन अभी आपके वनवास का समय नहीं है।[7]

वानप्रस्थ आश्रम में पत्नी भी साथ जा सकती थी, ऐसा उल्लेख है। ऋष्यश्रृंग ऋषि के साथ शान्ता तथा गौतम के साथ अहिल्या वन में रही। इसके अतिरिक्त कितने ही ऋषियों ने

वनवासी होकर गृहस्थ धर्म का पालन किया। *ऋर्षि पुलस्त्य से राजर्षि* तृणबिन्दु की कन्या ने पुत्र प्राप्ति की। रावणादि की उत्पत्ति विश्रवा से हुई।[8]

अध्यात्म रामायण में वानप्रस्थियों ने उपनिषद, दर्शन एवं भक्ति के तत्वों के ज्ञान का आर्विभाव किया था। सामाजिक व्यवस्था व्यवस्थित रही और समाज भी सुखी रहा, क्योंकि स्वार्थ–त्यागी मनीषियों के संयमित जीवन से नई पीढ़ी के लिये इन गुणों को अपने में आत्मसात् करने की दिशा में प्रेरणा प्राप्त होती रही।

सन्यास आश्रम : शोधार्थिनी इस अध्याय के पूर्व प्रकरणों में स्पष्ट कर चुकी है कि अन्य आश्रमों की भाँति सन्यास आश्रम भी भारतीय संस्कति में विशिष्ट मान्यता से मण्डित रहा है। वैदिक काल से ही भारतीय मनीषियों ने इस आश्रम को पारलौकिक कल्याण का विशिष्ट साधन माना है।

अध्यात्म रामायणकार रामशर्मन् ने भी सन्यास आश्रम को पारलौकिक कल्याण का सर्वोपरि साधन माना है। अध्यात्म रामायण में आध्यात्मिकता की प्रमुखता होने केकारण इस रामायण में सन्यास आश्रम का वाल्मीकि रामायण की अपेक्षा अधिक विशद्ता से वर्णन पाया जाता है।

अध्यात्मरामायण में इस आश्रम में जीवन व्यतीत करने वाले आश्रमाचरितों के लिये भिक्षु या सन्यासी शब्द का प्रयोग किया है। भिक्षु के रूप में रावण से जो कुछ भी परिचय मिलता है, वह भी मात्र इतना कि भिक्षु वेष धारण करके तथा हाथ में दण्ड व कमण्डल ग्रहण किये हुए आया था।[9]

निष्कर्ष : निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अध्यात्म रामायण में प्राप्त संस्कृति ने सदा से भारतीय संस्कृति एवं यहाँ के रहन–सहन को प्रभावित किया है। इस संस्कृति ने भाव एवं भावनाओं को प्रभावित किया तथा समाज का संतुलन करने के साथ ऐहिकामुष्मिक अभ्युदय प्रदान किया है। यदि हम अध्यात्म रामायण के अधिकार, सम्मान एवं सामाजिक नियमों आदि पर किंचित् विचार करें तो हम कह सकते हैं कि अध्यात्म रामायण में दूसरों के अधिकारों को सम्मान करना सामाजिक दृष्टि से नितान्त आवश्यक माना गया है और यदि कोई इस नियम की अवहेलना करने का दुःसाहस करता है तो वह दण्ड का पात्र होता है। जब अन्धे मुनि के पुत्र की हत्या से शापित दशरथ को भी पुत्र शोक प्राप्त हुआ था। सूर्पणखा के द्वारा राम को अपनी ओर आकर्षित करने की धृष्टता सीता के वैवाहिक

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अधिकार के लिये चुनौती थी। बालि ने सुग्रीव की पत्नी के उपभोग से उसके सतीत्व को छीना। शासन का कर्तव्य था कि वे इन दोनों को दण्डित करें। अतः इस व्यवस्था के अनुसार राम सीता के सुखपूर्वक रहने के अधिकार को छीनने के कारण रावण नेस्वयं ही सर्वनाश को निमन्त्रण देकर दण्ड प्राप्त किया। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा समाज हित की दृष्टि से अपेक्षणीय नहीं है, क्योंकि वर्णाश्रम व्यवस्था सामाजिक एवं वैयक्तिक दृष्टि से उनकी आवश्यकता पर बल देती है।

सन्दर्भ (References) :

अध्यात्मरामायण, बालकाण्ड, 3/60
वही, 4/25
अध्यात्म रामायण उत्तरकाण्ड, 6/34
वही, अरण्यकाण्ड, 2/3
वही, अयोध्या काण्ड, 9/24–25
वही, युद्ध काण्ड, 5/5,5/24
वही, अयोध्याकाण्ड, 9/24
वही, 1/34
वही, अरण्यकाण्ड, 7/37–38

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies